आई.एस.एस.एन. संख्या : 2454–2458
नवरचना NAVRACHNA
www.grefiglobal.org/journals/navrachna.2017
वर्ष 3, अंक 1–2, जून–दिसम्बर 2017, पृ. 45–56

आधुनिकता, उत्तर–आधुनिकता और वैश्वीकरण पर गिडिन्स के विचार

प्रीति तिवारी*

समाज वैज्ञानिकों में आधुनिकता के मुद्दे पर एक बहस छिड़ी हुई है जिसमें लियोटार्ड आदि जैसे अनेकों विद्वानों का तर्क है कि आधुनिकता समाप्त हो गई है तथा उत्तर–आधुनिकता के एक नये युग का प्रारम्भ हु चुका है। समकालीन समाज में पायी जाने वाली अविभेदीकरण (De-differentiation) की प्रक्रिया तथा अन्य जटिलताएँ इसकी प्रमुख विशेषताएँ है। तथा आधुनिता के इस भिन्न रुप में एक नए प्रकार का एकीकरण उभर कर सामने आता है। एन्थोनी गिडिन्स उन सामाजिक सिद्धान्तकारोंमें से एक हैं जिन्होंने उत्तर–आधुनिकतावादी विद्वानों के इस अभिमत से अपनी असहमति व्यक्त की है। अपनी मौलिक कृति *आधुनिकता के परिणाम* (1990) में उनका तर्क है कि 'आधुनिकता की परियोजना' (Project of Modernity) अभी समाप्त नहीं हुई है, अपितु यह एक नई स्थिति में पहुँच गई है जिसे वे उच्च आधुनिकता अथवा विलंबित आधुनिकता (high modernity or late modernity) की संज्ञा देते हैं। वैश्वीकरण की प्रक्रिया की व्याख्या करने में गिडिन्स ने अपने इसी तर्क को आगे बढ़ाया है। उनका मानना है कि वैश्वीकरण हमारे जीवन के सभी क्षेत्रों मे हो रहे रुपान्तरण की एक प्रक्रिया हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में वैश्वीकरण तथा आधुनिकता के मध्य पाये जाने वाले जटिल सम्बन्ध को एन्थोनी गिड़िन्स द्वारा विकसित अवधारणात्मक प्रारुप की सहायता से समझने का प्रयास किया गया है।

पूर्व आधुनिकता एवं उत्तर–परम्परावाद

एन्थोनी गिड़िन्स ने सर्वप्रथम परम्परागत अथवा आधुनिक संस्कृति (Traditional or Pre-modern Culture) तथा उत्तर परम्परागत अथवा आधुनिक संस्कृति (Post traditional or Modern Culture) के मध्य पायी जाने वाली महत्वपूर्ण विषमता (contrast) को स्पष्ट किया है। कुछ विद्वानों द्वारा जिस प्रघटना को उत्तर–आधुनिकता की संज्ञा दी गई है, गिड़िन्स के शब्दों में यह प्रायः एक पूर्ण रुप से विकसित आधुनिकता का एक अतिरंजित उदाहरण मात्र है इसके लिए हमें गिड़िन्स द्वारा समाज की बढ़ती हुई उत्तर–परम्परागत प्रकृति के विश्लेषण को समझना आवश्यक है। जब समाज

*प्रीति तिवारी, रिसर्च स्कालर, वैश्वीकरण एवं विकास अध्ययन केन्द्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद 211002

में परम्परा का प्रभुत्व होता है तो व्यक्ति की क्रियाओं का विश्लेषण व विचार नहीं किया जाता क्योंकि उसकी अभिरुचियों को परम्पराओं तथा प्रथाओं द्वारा पहले से ही निर्धारित कर दिया जाता है। समाज के उत्तर–परम्परागत प्रकारों में हम पहली पीढ़ियों द्वारा निर्धारित अधिमानों (Precedence) के विषय में कोई चिंता नहीं करते तथा व्यक्तियों के सामने विकल्प कम से कम उस सीमा तक खुले होते हे जहाँ तक कानून तथा जनमत इसकी स्वीकृति प्रदान करते हैं और समाज में अधिक 'रेफलेक्सिवीटी' (Reflexivity) प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है। गिडिन्स समाज के सभी पक्षों में बढ़ रही परावर्ती प्रवृत्ति से प्रभावित हैं जो एक ओर औपचारिक शासन व्यवस्था में दृष्टिगोचर होती है तो वहीं दूसरी ओर इसे गहन यौन सम्बंधो में भी देखा जा सकता है। उनके विचार से *उत्तर परम्परावाद ही आधुनिकता है*। कोई भी समाज तब तक आधुनिक नहीं हो सकता जब तक कि उसकी प्रवृत्तियाँ, क्रियाएँ तथा संस्थाएँ परम्पराओं से प्रभावित रहती हैं। परम्पराओं से प्रभावित होकर यदि व्यक्ति कोई कार्य करते हैं तो यह आधुनिक परावर्तिता के विरुद्ध है। गिड़िन्स का मानना है कि यदि कोई समाज आधुनिक बनने के लिए प्रत्यक्ष रुप से दिखाई देने वाली संस्थाओं जैसे पूँजीवादी लोकतांत्रिक व्यवस्था को तो अपनाता है परन्तु दूसरी परम्पराओं जैसे लिंग असमानता(Gender Inequality) को उखाड़ कर नहीं फेंक सकता तो उसके आधुनिक समाज बनने के प्रयास में असफल होने की प्रबल सम्भावना है। आधुनिक समाज में स्वःपहचान (Self Identity) एक अपरिहार्य मुद्दा (inescapable issue) बन जाती है। आधुनिक समाज में व्यक्ति अपने सम्पूर्ण जीवन में दैनिक प्रश्नों जैसे वस्त्र, उपस्थिति तथा रिक्त समय से लेकर अपने सम्बन्धों, विश्वासों तथा व्यवसायों के विषय में उच्च प्रभावी निर्णयों को लेने के लिए अपरिहार्य रुप से बाध्य होते हैं।

उच्च आधुनिकता की प्रमुख विशेषताएँ

गिड़िन्स के अनुसार वैश्वीकरण एक ऐसी प्रघटना है जिसको 'आधुनिकता' के संदर्भ से बाहर जाकर नही समझा जा सकता क्योंकि वैश्वीकरण का उद्भव आधुनिकता से ही हुआ हैं। उनका तर्क है कि वास्तव में आधुनिकता स्वयं ही वैश्वीकृत हो रही है तथा इसका प्रमाण आधुनिक संस्थाओं की उन कुछ मूलभूत विशेषताओं, विशेष रुप से उनकी डिस्एम्बेडिंडनेस व रेफलेक्सिविटी (discmbeddedness and reflexivity) में मिलता है। आधुनिकता सामाजिक जीवन का एक गतिमान तथा रुपान्तरित स्वरुप है जिसका उदय यूरोप में 17वीं शताब्दी से प्रारम्भ हुआ तथा बाद में जिसका प्रभाव न्यूनाधिक सम्पूर्ण विश्व में देखा जा सकता है। इसको पूर्ववर्ती समाजों से मुख्यतः सामाजिक परिवर्तन की तीव्रता इसके क्षेत्र तथा आधुनिक संस्थाओं के प्रफलन (Proliferation) तथा विकास के द्वारा स्पष्ट रुप से अलग किया जा सकता है। यद्यपि इन सभी में सबसे महत्वपूर्ण समय तथा स्थान (Time and Space) के रुपान्तरण मे इसकी भूमिका है। आधुनिकता की यह विशेषता गिड़िन्स के अवधारणात्मक प्रारुप की पहली विशेषता है। जिसका प्रयोग उन्होंने अभी वैश्वीकरण की व्याख्या में किया है।

आधुनिकता के अंतर्गत स्थान तथा समय के रुपान्तरण का अर्थ है कि सभी पूर्व आधुनिक संस्कृतियों में समय–स्थान के साथ सम्बद्ध थे जब तक की यांत्रिक घड़ी द्वारा समय के मापन में

एकरुपता से मिला नहीं दिया गया अर्थात पूर्वआधुनिक समाज में समय तथा स्थान एक–दूसरे से जुड़े थे। हर समाज में समय का मापन अपने हिसाब से किया जाता था उदाहरण के लिए भारत में समय की गणना भारतीय खगोलशास्त्रीय पद्वती के अनुसार की जाती थी जिसकर इकाईयाँ घटी, प्रहर आदि थी। इसी प्रकार सभी समाजों मे समय की गणना स्थानीय पद्दति से समय का मापन करने के लिए यांत्रिक घड़ी का आविष्कार होने पर समय को स्थान से पश्थक कर दिया तथा समय के सामाजिक संगठन में एकरुपता ला दी जैसे आज सम्पूर्ण विश्व में एकदिन 24 घंटे का होता है जिसको सभी समाजों ने स्वीकार कर लिया है तथा आज समय का मापन एक ही याँत्रिक घड़ी से किया जाता है। स्थानीय समय के अनुसार घड़ी को आगे या पीछे कर लिया जाता है। इसके अतिरिक्त समाज की गतिविधियों को के संगठन में एकरुपता आ गई है, जेसे आज हम एकसी अवधाराणाओं का प्रयोग करते है जैसेः– सुबह, शाम, रात्रि, आफिस टाइम, लंच टाइम, डिनर टाइम, ब्रेक फास्ट टाइम, टी/काफी टाइम आदि। समय के इस रुपान्तरण ने जहाँ एक ओर वैशविक स्तर पर एक प्रमाणिक कलेंडर को प्रचलित कर दिया तो वही क्षेत्रों से ऊपर उठकर समय को भी स्थापित कर दिया। गिड़िन्स कस यह दावा है कि 'समय की रिक्तता', 'स्थान की रिक्तता' हेतु पूर्वदशा का एक बड़ा भाग थी तथा एक अर्थ में इसका कारण भी क्योंकि समय के अनुसार समायोजन स्थान के नियंत्रण का आधार है। उनके अनुसार 'रिक्त स्थान' (empty space) के विकास को स्पेस तथा प्लेस के पृथक्करण के रुप में परिभाषित किया जा सकता है जो कि सामाजिक सम्बधों की व्यवस्था है जिसमें व्यक्ति भौतिक रुप से परस्पर जुड़े होते हैं। आधुनिकता ने 'स्पेस' को 'प्लेस' की इस धारणा से उत्तरोत्तर (Progressive) अलग कर दिया।

2. सामाजिक व्यवस्थाओं के विस्थापन की प्रक्रिया

समय तथा स्पेस के इस पृथक्करण को समरेखीय विकास (Unilinear develoment) के रुप में नहीं देखना चाहिए। गिड़िन्स का तर्क है कि इसके तीन पक्ष हैं इनमें से सर्वप्रथम अंतःस्थापन की प्रक्रियाओं की प्रारम्भिक अवस्था है।

द्वितीय यह आधुनिक जीवन की प्रभेदक विशेषता–तार्किक संगठन के लिए गियर व्यवस्था का कार्य करता है। (gearing mechanism) तश्तीय आधुनिकता की मूलभूत ऐतिहासिकता (Radical Historicity) समय तथा शून्य में अंतर्निवेश के प्रकारों पर निर्भर करती है जो कि पूर्ववर्ती सभ्यताओं मे उपलब्ध नहीं थें। इस अर्थ में इतिहास भविष्य का स्वरुप निर्धारित करने हेतु भूतकाल का व्यवस्थित विनियोजन है। (Systematic appropriation) यह तीनों पक्ष आधुनिकता को चरम गत्यात्मकता (extreame dynamism) प्रदान करते हैं परन्तु इनमें से प्रथम विस्थापनीकरण (discombedding) की क्रेन्द्रीय प्रक्रिया है वैश्वीकरण की उत्पत्ति हुई तथा अभी भी यह निरंतर वैश्वीकरण को गति प्रदान करती है। गिड़िन्स के अनुसार विस्थापनिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसने सामाजिक सम्बंधों को अतःक्रिया के स्थानीय संदर्भ से उठाकर समय शून्यता के अनिश्चित विस्तार में उनकी पुर्नसंरचना कर दी है। समाजशास्त्रियों ने परम्परागत समाज से आधुनिक समाज में रुपान्तरण के प्रक्रिया की विवचेना

'विभेदीकरण' तथा 'प्रकार्यत्मक विशिष्टीकरण' की अवधारणाओं के माध्यम से की है। इस मत के अनुसार लघुस्तरीय व्यवस्थाओं से कृषि सभ्यताओं तथा इसके पश्चात आधुनिक समाज में परिवर्तन की धीमी गति से हो रहे आंतरिक विभिन्नीकरण की प्रक्रिया के रुप में देखा है। इस धारणा पर कई आपत्तियाँ उठाई जा सकती है। यह एक प्रकार का उद्विकासवादी दशष्टिकोंण है जो सामाजिक व्यवस्थाओं के विशलेषण में 'सीमा की समस्या' (boundary problem) पर ध्यान नहीं देता है तथा प्रायः प्रकार्यवादी धारणाओं पर निर्भर करता है। यहाँ अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि यह समय–शून्य दूरत्वीकरण (Time Space distantiation) के मुद्दे को संतोषजनक रुप से नहीं देखता है विभेदीकरण तथा प्रकार्यत्मक विशिष्टीकरण सामाजिक व्यवस्था द्वारा समय तथा शून्यता को कोष्टीकरण की प्रघटना के प्रबंधन हेतु अधिक उपयुक्त नही है।

विस्थापिनीकरण के द्वारा निर्मित चित्र समय तथा शून्यता के स्थानतरित सुनियोजन स्तर व दव्यता को बेहतर तरीके से चित्रित करने में समर्थ है। जो सामान्य रुप से सामाजिक परिवर्तन तथा विशेष रुप से आधुनिकता की प्रकृति के लिए मूलरुप से महत्वपूर्ण है।

गिड़िन्स ने दो प्रकार के विस्थापनीकरण में विभेद किया है जो आधुनिक सामाजिक संस्थाओं के विकास में वस्तुतः सम्मिलित होते हैं।

(1) साकेंतिक प्रतीकों की रचना (Creation of Symbolic tokens)

(2) विशेषज्ञ व्यवस्थाओं की स्थापना

सांकेतिक प्रतीकों से तात्पर्य विनिमय के उन माध्यमों से है निको किसी व्यक्ति अथवा समूह के विशिष्ट लक्ष्णों का संदर्भ लिए बिना लेनदेन के लिए प्रयोग में लाया जा सके। समाज में विभिन्न प्रकार के सांकेतिक प्रतीक हो सकते है जैसे राजनीतिक वैधता के माध्यम। परन्तु इसके मुद्रा (money) के प्रतीक से अधिक अच्छी तरह से समझा जा सकता है। समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र दोनों में मुद्रा की प्रकृति का विस्तश्त रुप से विवेचन किया गया है।

अपने आरम्भिक कृतियों मे मार्क्स ने मुद्रा को एक 'सार्वभौमिक वैश्या' की संज्ञा देते हुए इसे विनिमय का ऐसा माध्यम बताया है जो वस्तुओं तथा सेवाओं की अंतरवस्तु को नकारते हुए उनके स्थान पर एक अवैयक्तिक मानक (impersonal standard) को स्थापित करता है। मुद्रा किसी भी वस्तु का किसी भी अन्य वस्तु से विनीमय की स्वीकृति प्रदान करती है।

बिना इस बात का संदर्भ लिए कि इन वस्तुओं में कोई समान गुण है अथवा नहीं। मार्क्स की मुद्रा पर की गई आलोचनात्मक टिप्पड़ियाँ उसके द्वारा बाद में उपयोग मूल्य (use-value) तथा विनिमय मूल्य में किए गए अंतर से सम्बन्ध रखती है। इसकी 'विशुद्ध वस्तु' (pure commodity) के रुप में भूमिका होने के कारण मुद्रा विनिमय मूल्य के सामन्यकरण को संभव बनाती है। मुद्रा के विषय में प्रसिद्ध समाजशास्त्री टालकॉट पारसन्स के विचार भी महत्वपूर्ण है। उनके अनुसार मुद्रा आधुनिक समाजो में पाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के 'संचरणशील माध्यमों' (Circulatay Media) में से एक

है। दूसरे माध्यमों में वे शक्ति (power) तथा भाषा (language) को सम्मिलित करते हैं। यद्यपि गिड़िन्स की सांकेतिक प्रतीको की धारणा पारसन्स की उपरोक्त धारणा से जुड़ी हुई है परन्तु गिड़िन्स शक्ति तथा भाषा को मुद्रा अथवा अन्य विस्थापनीकरण की क्रियाविधियों के समकक्ष नहीं मानते क्योंकि शक्ति तथा भाषा का प्रयोग एक बहुत ही सामान्य स्तर पर सामाजिक क्रिया के वास्तविक लक्षण हैं ना कि विशिष्ट सामाजिक स्वरुप। आधुनिक समाजों में धन समय–शून्यतः दूरत्वीकरण का एक माध्यम है। धन समय तथा शून्यता में विस्तृत रुप से अलग एजेंटो के मध्य होने वाले सौदों की व्यवस्था को बनाता है। आधुनिक मौद्रिक अर्थव्यवस्था द्वारा प्रदत्त विस्थापन पूर्व आधुनिक सभ्यताओं की तुलना में बहुत अधिक होता है। आज धन उन सभी साधनों से स्वतंत्र है जो इसका प्रतिनिधित्व करते हैं तथा यह एक विशुद्ध सूचना का आकार/स्वरुप ले चुका है जो एक कम्प्यूटर के प्रिंट आउट में दर्ज रहती है। अतः धन, आधुनिकता के साथ जुड़ी विस्थापन कार्यविधियों का एक उदाहरण हैं

(2) विशेषज्ञ व्यवस्थाएँः

सभी विस्थापन कार्यविधियाँ, सांकेतिक प्रतीक तथा विशेषज्ञ व्यवस्थाएँ दोनों ही 'विश्वास' (trust) पर निर्भर करती हैं। इस प्रकार विश्वास आधुनिक सामाजिक संस्थाओं के साथ मूल रुप से जुड़ा है। यहाँ पर विश्वास किसी वयक्ति में निहित न होर अमूर्त क्षमताओं में निहित होते हैं। उदाहरण के लिए मौद्रिक संकेतों का उपयोग कोई व्यकित इस प्रकल्पना के आधार पर करता है कि अन्य व्यक्ति जिनसे वह कभी नहीं मिला, इसके मूल्य का सम्मान करेंगे। परन्तु वास्तव में विश्वास व्यक्ति पर न होकर धन अथवस मुद्रा में होता है। संक्षेप में कहा जा सकता है।

जहाँ तक विशेषज्ञ व्यवस्थाओं की प्रकृति का सम्बंध है, गिड़िन्स इसे तकनीकी निपुणता की व्यवस्थाओं अथवा वशत्तिक विशेषज्ञता (Proferricnal expertise) के रुप में परिभाषित किया है जो उन भौतिक तथा सामाजिक पर्यावरणों के बड़े क्षेत्रों को संगठित करती हैं , जिनमें आज हम रहते हैं। अधिकतर आम व्यक्ति इन वशत्रिकों जैसेः वकील, आर्किटेक्ट, डॉक्टर इत्यादि को किसी एक विशेष समय अथवा अस्थायी रुप से परामर्श लेते हैं। परन्तु वे व्यवस्थायें जिनमें विशेषज्ञों का ज्ञान समाहित होता है, हमारे द्वारा किए गए कार्यो के अनेकों पक्षों को प्रभावित करती है। सिर्फ अपने घर में बैठे रह कर भी मैं एक विशेषज्ञ व्यवस्था या ऐसी व्यवस्थाओं के एक क्रम से जुड़ा रहता हूँ जिनमें मेरा विश्वास निहित होता है। मुझे अपने घर में सीढ़ियों पर चढ़कर ऊपर जाने मे कोई भय नही लगता यद्यपि मैं जानता हूँ कि सिद्धान्त रुप में यह घर गिर सकता है। मुझे मकान के डिजाइन तथा निर्माण में आकिटेक्ट तथा बिल्डर द्वारा उपयोग किए गए तकनीकी ज्ञान के बारे में बहुत कम ज्ञात होता है फिर भी मेरा उनके द्वारा किए गए कार्य में विश्वास रहता है। मेरा विश्वास उन व्यक्तियों में उतना आधिक नहीं है परन्तु मुझे उनकी निपुणता मे विश्वास है क्योंकि उनके द्वारा प्रयुक्त विशेष ज्ञानकी प्रमाणिकता एक ऐसी चीज़ है जिसको में स्वयं विस्तश्त रुप से जाँच नही सकता। जब मैं अपने घर से बाहर कार में जाता हूँ तो मैं एक ऐसे विन्यास में प्रवेश करता हूँ जो पूर्ण रुप से विशिष्ट ज्ञान

द्वारा निर्मित है, जिसमें आटोमोबाइल के ड़िजाइन तथा निर्माण हाईवे, चौराहे, लालबत्ती तथा दूसरी चीजे भी सम्मिलित हैं।

(4) उच्च आधुनिकता की चौथी विशेषता है स्थायी स्वतुल्यता (Chronic reflenivity) प्रंबधन तथा नवीन ज्ञानक के प्रकाश में सामाजिक संबन्धों की पुर्नव्यवस्था करना। गिड़िन्स का तर्क है कि आज के युग में ज्ञान को, चाहे उसकी प्रकृति वैज्ञानिक अथवा सामाजिक, अस्थायी तथा परिवर्तनीय समझा जाता है जबकि पूर्व के समाजों में परम्परा तथा सत्ता, प्रथा तथा धर्म अपेक्षाकृत रुप से स्थाइत्व प्रदान करते थे। इस प्रकार ज्ञान के मूलभूत आधार में एक निंरतर परिवर्तन हो रहा है तथा व्यक्ति इसकी हमेंशा जाँच करते रहते हैं तथा इसका प्रयोग परिवर्तित क्रियाओं तथा सामाजिक सम्बंधों के आधार के रुप में करते है। आधुनिकता की स्वतुल्यता विशिष्ट ज्ञान तथा सामान्य क्रियाओं मे प्रयुक्त ज्ञान के बीच सम्बन्ध को स्थाई नहीं करती। विशेषज्ञ अवलोकनकर्ताओं द्वारा आधिकारिक ज्ञान अपनी विषयवस्तु का प्रतिउत्तर देता है। तथा इस प्रकार उसमें परिवर्तन लाता है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण भौतिक विज्ञानों के विकास की प्रक्रिया में परिलक्षित होता है।

आधुनिकता अथवा उत्तरआधुनिकता

गिड़िन्स ने स्वतुल्यता की धारणा को उत्तर आधुनिकता की बहस से जोड़ने का प्रयास किया है। उत्तर आधुनिकता को प्रायः उत्तरआधुनिकतावाद, उत्तरऔद्योगिक समाज आदि के पर्यायवाची के रुप में प्रयुक्त किया जाता है तो इसको साहित्य, पेंटिग, प्लास्टिक आर्ट तथा आर्किटेक्चर के अंतर्गत हुए आंदोलनों तथा शैलियों के संदर्भ में देखा जा सकता है। इसका सम्बंध आधुनिकता की प्रकृति पर सौंदर्यपरख चिन्तन के पक्षों से है। यद्यपि आधुनिकतावाद को कई बार अस्पष्ट रुप से परिभाषित किया गया है तथा कई बार साहित्य एवं कला आदि क्षेत्रों में कई विशिष्ट दृष्टिकोंण प्रचलित रहे है जिन्हें आधुनिकता वाद से जोड़कर देखा जाता रहा है। उत्तर आधुनिकतावाद के प्रभावों नक इन उपरोक्त दृष्टिकोणों को विस्थापित कर दिया है। परन्तु उत्तर आधुनिकता इससे कुछ अलग है। यदि हम उत्तर आधुनिकता की अवस्था में प्रवेश कर रहे हैं तो इसका अर्थ है कि सामाजिक विकास का प्रक्षेप पथ (trajectary) हमें आधुनिकता कि संस्थाओं से परे एक नवीन तथा भिन्न प्रकार की सामाजिक व्यवस्था की ओर ले जा रही है। उत्तर आधुनिकतावाद यदि वास्तव में इसका अस्तित्व है तो वह इस प्रकार के संक्रमण (transition) के विषय में जागरुकता को प्रकट करता है परन्तु यह नहीं दर्शाता कि इस अवस्था का वास्तव में अस्तित्व है या नही।

सामान्यतः उत्तरआधुनिकता का क्या अर्थ है? एक ऐसी धारणा के अतिरिक्त कि हम ऐसे काल में रह रहे हैं जो पूर्व काल से काफी भिन्न है इसके प्रायः अन्य अर्थ भी लगाए जाते है जो कि निम्नवत हैः कि हम लोगों ने इस बात की खोज कर ली है कि किसी भी वस्तु के बारे में निश्चित रुप से नहीं जाना जा सकता है, क्योंकि पहले से अस्तित्व में रही सभी ज्ञान–पद्दति शास्त्र के आधारों को अवश्विसनीय साबित किया जा चुका हैः इहिास उद्देश्यवाद कि रिक्तता (devoid of teleology) है तथा इसके फलस्वरुप प्रगति कि किसी भी अवस्था का बचाव करना सम्भव नहीं हैः कि एक नवीन सामाजिक

तथा रानीतिक कार्यक्रम अस्तित्व में आ गया है जिसमें पर्यावरणीय मुद्दों तथा शायद नये सामाजिक आंदोलनों की प्रधानता है। शायद ही आज कोई उत्तरआधुनिकता को पूर्व में आज कोई विस्तृत रुप से स्वीकृत उस अवधारणा को स्वीकार करेगा जिसमें समाजवाद द्वारा पूँजीवाद के विस्थापन की बात कही गई थी। इस प्रकार के पविर्तन को केंद्रीय पटल से एक ओर ढकेलते हुए वास्तव में आधुनिकता के सम्भावित विसर्जन (dissolution) के बारे में प्रस्तुत वर्तमान विवेचनों को प्रेरित करने वाले कई कारकों में से एक यह भी है जो मार्क्स द्वारा इतिहास के एक समग्र दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है। सबसेपहले हमें गम्भीर बौद्दिक विचार विमर्श में अनुचित विचार को अस्वीकार करना होगा कि मानव क्रिया अथवा सामाजिक विकास की प्रवर्तियों का व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त करना संभव नही हैं। गिड़िन्स ने उत्तरआधुनिकता के भिन्न सूत्रों की तुलना मे अपने अवधारणात्मक सूत्रों को निम्नलिखित तालिका के रुप में प्रस्तुत किया है। अपनी इस अवधारणा को उन्होंनक कट्टर आधुनिकता की संज्ञा दी है।

तालिका 1 के विवेचन से स्पष्ट है कि एन्थोनी गिड़िन्स का यह दृढ़ विश्वास है कि उत्तर आध ुनिकता वादी विचारकों की यह धारणा नितान्त बेतुकी एवं भ्रामक है कि आधुनिकता–परियोजना (Project of Modernity) समाप्त हो गई है तथा एक नयी सामाजिक व्यवस्था जन्म लेगी जो आधुनिक समाज से एकदम विछिन्न एवं प्रथक होगी। गिड़िन्स उत्तर आधुनिकता की इस अवधारणा को अस्वीकृ त करते हुए एक नयी अवधारणा 'कट्टर आधुनिकता' (Radicalised Modernity) का प्रतिपादन करते हैं जिसका उदय आधुनिकता की संस्थाओं में हो रहे रुपान्तरण के फलस्वरुप हो रहा है। रुपान्तरण की इस प्रक्रिया को आगे चलकर वह अपनी वैश्वीकरण की व्याख्या में भी सम्मिलित कर लेते हैं।

गिड़िन्स द्वारा वैश्वीकरण की व्याख्या

गिडिन्स के अनुसार वैश्वीकरण आधुनिकता की आवश्यक गत्यात्मकता की गहनता तथा विकास एवं इसके द्वारा शून्यता तथा समय के निरन्तर रुपान्तरण का प्रतिनिधित्व करता है । समकालीन वैश्वीकरण को समझने के लिए समय शून्यता दूरत्वीकरण (Time_space distanciation) प्रक्रियाओं की प्रकृति को समझना आवश्यक है। इस प्रारुप की केंद्रीय मान्यता स्थानीय संलग्नताओं (सह–उपस्थिति की परिस्थितियाँ) तथा दूरस्त अंतरक्रिया (उपस्थिति तथा अनुपस्थिति के सम्बन्ध) के मध्य सम्बन्धों की अवधारणा बनाने की आवश्यकता है गिडिन्स का तर्क है कि आधुनिक युग में समय शून्यता, दूरत्वीकरण का स्तर किसी भी पूर्व काल की तुलना में आज कहीं अधिक है। इसके आगे स्थानीय तथा दूरस्थ सामाजिक स्वरुप तथा घटनाओं के मध्य सम्बंधों में एक जटिल खिंचाव उत्पन्न हो गया है। खिंचाव की यह प्रक्रिया ही वैश्वीकरण का मूल तत्व है। इसका परिणाम यह हुआ है कि समकालीन सामाजिक जीवन को अधिकाधिक रुप से इन विस्तारित सम्बंधों के प्रकारों की विशेषता बताती है क्योंकि विभिन्न सामाजिक संदर्भ अथवा क्षेत्र पूर्ण रुप से पृथ्वी की सतह के साथ एक जाल (Network) बना लेते हैं। इस दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए उन्होंने वैश्वीकरण को विश्वव्यापी सामाजिक सम्बंधो की गहनता (intensification) के रुप में परिभाषित किया है जो दूरस्थ स्थानों को इस प्रकार जोड़ते हैं कि स्थानीय घटनायें मीलों दूर हो रही घटनाओं से प्रभावित होने लगती हैं। अथवा इसके विपरीत उनको प्रभावित करने लगती हैं। इसकी आगे व्याख्या करते हुए उन्होंने बताया

उत्तर आधुनिकता तथा कट्टर आधुनिकता की अवधारणाओं का तुलनात्मक विवरण

कट्टर आधुनिकता	उत्तर आधुनिकता
1. इसके अंतर्गत उन संस्थागत विकासों को चिन्हित किया जाता है जो विखण्डन तथा बिखराव उत्पन्न करते हैं।	1. वर्तमान संक्रमण को ज्ञान पद्दति शास्त्र के अर्थ में अथवा ज्ञान पद्यति शास्त्र के पूर्ण समाप्ति के रुप में समझा जाता है।
2. उच्च आधुनिकता को ऐसी परिस्थितियों के समुच्चय (set) के रुप में देखा जाता है जिसमे वैश्विक एकीकरण की ओर अग्रसर गहन प्रवृतियों को बिखराव से द्वन्दात्मक रुप से जोड़ती हैं।	2. वर्तमान सामाजिक रुपान्तरणों की अपकेंद्रीय प्रवृतयों तथा उनके अव्यवस्थित कर देने की विशेषता पर ध्यान केंद्रित किया जाता हैं
3. आत्म को प्रतिच्छेदित शक्तियों (intersecting forces) के स्थल से कहीं अधिक रुप में देखा जाता हैः आधुनिकता द्वारा स्वतुल्य आत्मसमरुपता (Sey Identity) की सक्रिय प्रक्रियाओं को सम्भव बनाया जाता है।	3. आत्म (Self) को अनुभव के विखण्डन द्वारा समाप्त अथवा विभाजित रुप में देखा जाता है।
4. इस बात पर बल देते हैं कि सत्यता के दावों की सार्वभौमिक विशेषताएँ हम पर स्वयं को एक अनिवार्यतः एक वैश्विक प्रकार की समस्याओं को प्राथमिकता प्रदान करने के लिए दबाव डालती हैं।	4. सत्यता के दावों की प्रासंगिकता पर बल देते हैं अथवा उन्हे 'ऐतिहासिक' रुप में देखते हैं।
5. शक्ति विहीनता तथा अधिकार–प्रदान (empowerment) की प्रक्रिया के मध्य द्वन्द को अनुभव तथा क्रिया दोनों रुप में देखा जाता है।	5. वैश्वीकरण की प्रविृतियों के सम्मुख व्यक्यिों द्वारा अनुभव की जाने वाली शक्ति विहीनता को सिद्धान्त के रुप में देखते हैं।
6. दिन प्रतिदिन के जीवन को अमूर्त व्यवस्थाओं के प्रति प्रतिक्रियाओं की एक सक्रिय समष्टि (complex) मानते हैं जिसमें उपयोग तथा हानि दोनों सम्मिलित हैं।	6. दिन प्रतिदिन के जीवन की 'शून्यता' (emptying) को अमूर्त व्यवस्थाओं के अतिक्रमण का परिणाम मानते हैं।
7. संचालित राजनीतिक अनुबंधों को वैश्विक तथा स्थानीय दोनों स्तरों पर सम्भावित तथा आवश्यक मानते हैं।	7. संचालित राजनीतिक अनुबंध को प्रासंगिता द्वारा बाधित देखते हैं।
8. उत्तर–आधुनिकता को आधुनिकता की संस्थओं से आगे की ओर हो रहे सम्भावित रुपान्तरणों के रुप मे देखते हैं।	8. उत्तर–आधुनिकता को ज्ञान पद्दति शास्त्र/व्यक्ति/अचारसंहिता के अंत के रुप में परिभाषित करते हैं।

कि यह सग अन्तरनिहित रुप से द्धन्दात्मक प्रक्रिया द्वारा घटित होती हैं क्योंकि 'स्थानीय घटनाएँ' उनको आकार देने वाले दूरस्थ सम्बंधों से आगे की दिशा में गतिमान होने लगती हैं। गिडिन्स (1991) ने इसको दो उदाहरणों द्वारा समझाया है। इनमें से पहला उदाहरण नगरीय आर्थिक विकास का हे जहाँ वैश्विक सम्बंध किसी एक नगर में सम्पन्नता उत्पन्न कर सकते हैं वहीं समान किस्म की प्रक्रियायें किसी अन्य शहर में आर्थिक पतन उत्पन्न कर सकती है उनका तर्क है कि यह एक ही प्रक्रिया है जो द्धन्दात्मक रुप से दो विपरीत परिणामों को उत्पन्न कर रही होती है। दूसरा उदाहरण इसी प्रकार वैश्वीकृत सामाजिक सम्बंधों के विकास का है जो कुछ स्थानों पर राष्ट्रीयता के एहसास के कुछ पक्षों को शक्तिहीन करती हैं। तो वहीं उसी समय अधिक स्थानीयकृत राष्ट्रीय भावनाओं की वृद्धि में कारणात्मक रुप से जुड़ जाती हैं।

गिडिन्स ने अंतरराष्ट्रीय, सम्बंधों के सिद्धान्त (I. R. Theory) विभिन्न राष्ट्र राज्यों के मध्य अंतःक्रिया से सम्बंधित समस्याओं (जो पूरी तरह गलत नहीं है,) तथा इस धारणा को कि विश्व राज्य व्यवस्था धीरे–धीरे अधिक एकीकृत हो गयी है, को निरविवादित रुप से स्वीकार कर लेता है। इसलिए वह वालेरस्टीन की इस बात के लिए प्रशंसा करता है कि उन्होंने रुढ़िवादी समाजशास्त्रीय विचारधारा की सीमाओं तथा राज्यों के भीतर सामाजिक परिवर्तन के अंतर्जनित प्रारुपों (indegenous models) के जुनून को सफलतापूर्वक तोड़ा है। विशेष रुप से उन्होंने वालेरस्टीन को वैश्वीकृत सम्बंधों पर ध यान परिवर्तित करने का श्रेय देता है। परन्तु साथ ही उसकी इस बात के लिए आलोचना भी करता है कि उसने आधुनिक रुपान्तरणों के लिए सिर्फ एक प्रभावशाली संस्थागत सम्बंध (पूंजीवाद) को उत्तरदायी बताते हुए एक संकीर्ण दशष्टिकोण का परिचय दिया है। वालेरस्टीन के विश्वव्यवस्था उपागम की एक बड़ी कमी यह है कि वह न तो राष्ट्र राज्य व्यवस्था के विकास, और न ही शक्ति के राजनीतिक अथवा सैन्यकेंद्रण को अलंकृत करने जिनका आार्थिक विभेदीकरण के साथ सही तालमेल नहीं बैठता है, का विवेचन करने में असमर्थ है।

इसी कारण गिड़िन्स का प्रस्ताव है कि विश्वव्यापी पूँजीवादी अर्थव्यवस्था वैश्वीकरण के चार पक्षों में से एक है। वैश्वीकरण के अन्य तीन पक्ष हैः (1) राष्ट्र राज्य (Nation-Sate) (2) विश्व सैन्य व्यवस्था (World Military Order) तथा (3) अंतर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन (International division of Labour)

राष्ट्र राज्य के सम्बंध मे ंगिडिन्स का तर्क है कि विश्व अर्थव्यवस्था में शक्ति का प्रमुख केंद्र पूँजीवादी राज्य है। यद्यपि आर्थिक गतिविधि के प्रमुख प्रतिनिधि–फर्म कुछ सीमा तक राजनीतिक क्षेत्र से अलग रहते हुए बहुत अधिक आर्थिक शक्ति का उपयोग कर सकतीं हैं। परन्तु कुछ मुख्य विषयों में वे राज्य के साथ शक्ति के सम्बंध में प्रतिद्धन्दता नहीं कर सकतीं। यह क्षेत्र आवश्यक रुप से प्रादेशिक तथा हिंसा के साधनों पर नियंत्रण रखना है उन्होंने इस बात पर बल दिया कि पृथ्वी की सतह पर धवीय क्षेत्रों के आंशिक अपवाद के साथ काई ऐसा क्षेत्र नहीं है जो किसी एक या अन्य राज्य के वेधानिक रुप से नियंत्रित क्षेत्र के अंर्तगत न आता हो। इस प्रकार राज्य तीसरे पक्ष–सैन्य व्यवस्था से बँधा हुआ है, जो कि युद्ध के औद्योगीकरण, शस्त्रों का प्रवाह तथा सैनिक संगठनक की तकनीकियों के मध्य विश्व के कुछ भागों से तथा उन गठजोड़ों से जो एक राज्य दूसरे राज्य से स्थापित करजा है, से जुड़ा है। उनका मानना है कि यह सम्बंध ठीक उसी प्रकार द्धन्दात्मक 'पुश–पुल' के रुप में

अस्तित्व में आते हैं जैसा कि शीत युद्ध के समय अमेरिका तथा सोवियत रुस के मध्य अन्य पक्षों में देखे जा चुके हैं, जो आवश्यक रुप से एक जो सैन्य गठजोड़ की एक द्विध्रुवीय (bipolar) व्यवस्था का निर्माण करते थे, जिसका विस्तार वैश्विक था। इस सैन्य गठजोड़ मे शामिल राष्ट्र आवश्यक रुप से स्वतंत्र सैन्य व्यूह रचनाओं को बाहिए रुप से निर्माण करने की अपनी सम्भावनाओं में कमियों को स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त सैन्य शक्ति का वैश्वीकरण हथियारों तथा गठजोड़ो तक ही सीमित नहीं है अपितु यह स्वयं युद्ध से सम्बन्धित है। गिडिन्स का तर्क है कि दो विश्व युद्धों ने यह सिद्ध कर दिया है कि किस प्रकार स्थानीय संघर्षो में वैश्विक संलग्नता हो जाती है। इस प्रकार जबकि परमाणु शस्त्र मुख्य शक्तियों के बीच इस प्रकार के युद्ध को रोकते हैं फिर भी परिधीय क्षेत्रों में जोरदार युद्धों की एक श्रृंखला को प्रोत्साहित करते हैं। चौथा पक्ष– औद्योगिक विकास– का सम्बन्ध वैश्विक श्रम विभाजन के विस्तार तथा उत्पादन के भूगोल से सम्बन्धित हैं उनका तर्क है कि कंपनियाँ तथा राज्य दोनों ही जटिल द्वन्दात्मक प्रक्रियाओं से बँधे हुए है जो विश्व स्तरीय वर्ग सम्बंधों को उत्पन्न करते हैं तथा जो श्रमिकों को उत्पादन के साधन से अलग करते हैं। यह वैश्वीकृत औद्योगिक विकास विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में विभेदीकरण को दो स्तरों पर निर्देशित करता है: (1) व्यवसायिक कार्य के स्तर पर तथा (2) क्षेत्रीय विशेषज्ञता के स्तर पर (उद्योग के प्रकारों, कौशलों तथा कच्चे माल के उत्पादन के अर्थ में)। उन्होंने मशीन तकनीकियों के विसरण को वैश्वीकृत औद्योगिकवाद की एक प्रमुख विशेषता बताया हैं तथा इस बात पर बल दिया है कि यह न केवल उत्पादन के क्षेत्र को प्रभावित करती है अपितु दिन प्रतिदिन के जीवन के अनेक पक्षों को भी प्रमाणित करती है। इससे भी आगे औद्योगिकवाद का यह विसरण एक अधिक नकारात्मक तथा धमकी देने के अर्थ में एक दुनिया का निर्माण करता है– एक ऐसी दुनिया जहाँ, हानिकारक किस्म के वास्तविक अथवा स्थतिज पारिस्थितकीय (Ecological) परिवर्तन पृथ्वी के सभी प्राणियों को प्रभावित करते है। गिडिन्स ने सांस्कृतिक वैश्वीकरण को उत्पन्न करने में यान्त्रिक संचार तकनीकियों की भूमिका की भी चर्चा की है। इसको वह आधुनिकता की स्वतुल्यत के एक आवश्यक तत्व के रुप में देखते हैं तथा वे अनिरन्तरताये (Discontinuities) जिन्होंने परम्रागत तरीकों से आधुनिकता को पूर्ण रुप से विच्देदित कर दिया। इस जागरुकता पर बल देने की अपेक्षा कि वैश्वीकृत मीडिया व्यक्तियों को पूरी विश्व की घटनाओं की जानकारी देता हे जिसके बारे में व अन्यथा अनभिज्ञ रहते, उनका सुझाव है है कि इससे अधिक महत्वपूर्ण आधुनिकता की संस्थाओं का वैश्विक विस्तार है, जिसका 'समाचार' कहे जाने वाले ज्ञान के संग्रह के बिना असंभव था।

अब यदि वैश्वीकरण आधुनिकता का एक परिणाम है तो इसका प्रभाव वैश्विक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था तथा राष्ट्रीय समाजों के नीचे कई स्तरों पर होना चाहिए। वैश्वीकृत आधुनिकता के अंतर्गत अधिक से अधिक संख्या में लोग ऐसी परिस्थितियों में रहते हैं जिनमें पश्थकीकृत संस्थायें स्थानीय चलनों (Practice) को वैश्वीकृत सामाजिक सम्बंन्धों से जोड़ रही हैं, नित्य प्रति के जीवन के प्रमुख पक्षों को संगठित कर रही है। 'विश्वास' (Trust) की प्रकृति के लिए इसके पहचान, तथा वैश्वीकरण और आधुनिकता के साथ उनके सम्बंधों कई परिणाम हें। विश्वास के सम्बंध में उनका तर्क है कि आधुनिक संस्थाओं की प्रकृति अमूर्त व्यवस्थाओं में विश्वास की कार्य विधि से गहनतापूर्वक सम्बद्ध है (अमूर्त व्यवस्था सांकेतिक चिन्हों तथा विशेषज्ञ व्यवस्थाओं के लिए एक सामूहिक शब्द है।) जैसे–जैसे आधुनिकता के अनेक पक्षों का वैश्वीकरण होता है तो इसका अर्थ है कि कोई भी इन अमूर्त

व्यवस्थाओं से बाहर रहने का विकल्प नहीं रखता तथा विश्वास सम्बंध आधुनिकता के साथ जुड़े विस्तश्त समय शून्यता दूरत्वीकरण के लिए आवश्यक हो जाते हैं। वह इस प्रस्थापना को इस तर्क से जोड़ते हैं कि पूर्व आधुनिम समाजों से विपरीत हमारी सत्तामूलक सुरक्षा (व्यक्तियों द्वारा अपनी आत्म पहचान (self Identity)तथा अपने पर्यावरण कि स्थिरता, में महसूस किए जाने वाले आत्म–विश्वास के रुप में परिभाषित) तथा विशेष रुप में स्थान के साथ इसके सम्बंध को पश्थकीकरण तथा समय–शून्य दूरत्वीकरण द्वारा बड़ी सीमा तक नष्ट किए जाते है। विश्वास अपने स्थानीस संदर्भो से अधिक से अधिक रिक्त हो जाते हैं।

व्यक्तियों के स्तर पर 'पहचान' के लिए इसके पाँच प्रमुख परिणाम है।

(1) वैश्वीकरण व्यक्तियों के लिए आधुनिकता की वैश्वीकृत प्रवशत्तियों तथा दिन प्रतिदिन के जीवन में स्थानीय घटनाओं के मध्य एक आंतरिक सम्बंध उत्पन्न करता है।

(2) व्यक्तियों को आत्म का निर्माण एक उद्देश्य (reflenive project) के रुप में करना होगा जिसका अमूर्त व्यवस्थाओं द्वारा प्रदान किये हुए व्यूह रचनाओं के मध्य अपनी पहचान सथापित करना है।

(3) आत्म–वास्तवीकरण (self-actualization) की प्रबल प्रेरणा को प्रदर्शित करते हैं जो कि मूल विश्वास पर आधारित होते हैं। व्यक्तिगत संदर्भो में ये केवल आत्म को दूसरों के समक्ष खोलकर स्थापित किये जा सकते हैं।

(4) व्यक्तिगत तथा कामोंउत्तेजना को 'सम्बधों' के रुप में निर्माण आत्म–प्रकटीकरण की पास्परिकता द्वारा निर्देशित होता हैं।

(5) आत्मसंतशप्ति (self-fulfilment) के लिए चिन्ता है जो एक भाग में बाह्य रुप से धमकी भरी दुनिया जिसपर व्यक्तियों बहुत कम नियंत्रण होता है, के विरुद्ध एक 'स्वःकेंद्रित सुरक्षा' (a narcissistic defence) है तथा उन परिस्थितियों का ऐ सकारात्मक विनियोजन है जिसमें वैश्वीकरण प्रतिदिन के जीवन पर प्रभाव डालता है। इस प्रकार वैश्वीकरण आत्म तथा आधुनिकता की दशा में जकड़े हुए प्रत्येक व्यक्ति के दैनिक अनुभव का रुपान्तरण करने के लिए बाध्य है।

वर्तमान सामाजिक जीवन का अंतिम मुख्य पक्ष जिसके प्रति गिडिन्स ने वैश्वीकरण की अपनी सैद्धान्तिक समझ से सम्बोधित किया है वह आधुनिक विश्व में जोखिम (risk) तथा खतरे (danger) की प्रकृति है। इस सम्बंध में उसका तर्क है कि आधुनिकता की विपदा रुपरेख (risk-profile) वैश्वीकृत सम्बंधों से बँधी हुई है। वैसे तो इसके कम से कम सात पक्ष हैं, परन्तु इनमें से चार पक्षों को गिडिन्स अधिक महत्वपूर्ण मानते है।

(1) गिडिन्स का तर्क है कि जोखिम का वैश्वीकरण दो प्रकार से हो रहा हैः एक तो इसकी गहनता (जैसे परमाणु युद्ध) के अर्थ में तथा दूसरा आकस्मिक घटनाओं की संख्या में बढ़ोतरी के अर्थ मे जो पश्थ्वी पद रह रहे लोगों की बड़ी संख्या को प्रभावित करती है। (जैसे वैश्विक श्रम विभाजन)

(2) जोखिम रचित पर्यावरण अथवा सामाजीकृत प्रकृति से उत्पन्न होता है (जिसे वह भौतिक पर्यावरण में ज्ञान के संचार के रुप में देखता है)

(3) तीसरा पक्ष संस्थागत जोखिम पर्यावरण का विकास है जो पुनः पश्थ्वी पर रह रहे व्यक्तियों कि एक बड़ी संख्या के जीवन को प्रभावित करता है। वैश्वीकृत वित्तीय बाज़ार इसका एक अच्छा उदाहरण है।

(4) अंतिम जोखिम जागरुकता (risk-awareness) के तरप स्वरुप हैः

(1) 'जोखिम की जोखिम के रुप में जागरुकता' जहाँ जोखिमों के विषय में अनभिज्ञता को धार्मिक अथवा जादुई ज्ञान द्वारा निश्चिताओं में नहीं बदला जा सकता जैसा कि पूर्व आधुनिक समाज़ों में होता था

(2) 'जोखिम की भली प्रकार वितश्त जागरुकता' जहाँ सामूहिक रुप से सामना किये जाने वाले खतरों से लगभग सभी परिचित होते है;

(3) 'विशेषता की सीमाओं की जागरुकता' जहाँ कोई भी विशेषज्ञ नहीं है। गिडिन्स ने जोखिम के इन स्वरुपों के परिणामों की विस्तृत विवेचना की है परन्तु यहाँ पर उसके इस कथन को उदश्धत किया जा सकता है कि जोखिम तथा खतरे की यह सभी स्वरुप उस समय दैनिक जीवन के सभी पक्षों में व्यापत हो जाते हैं जब स्थानीय तथा वैश्वीकृत का एक असाधारण प्रक्क्षेपण अधिक परावर्तित होने लगता है

अतः गिडिन्स के लिए आधुनिकता तथा वैश्वीकरण अविभाज्य प्रघटनाएँ हैं तथा एक की दूसरे के बिना व्याख्या अथवा प्रभावी रुप से समझना असम्भव है। उनके वैश्वीकरण के सिद्धान्त का क्षेत्र बहुत व्यापक हे जो समकालीन वैश्विक समाज तथा अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित सभी प्रचलित बहसों का सामना करता है तथा इनका विकास किस प्रकार से हो रहा है। इस प्रकार उनकी वैश्वीकरण की धारणा वालेरस्टीन से बहुत आगे चली जाती है क्योंकि यह शास्त्रीय समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों के आधार पर इस बात का सैद्धान्तिक विवेचन प्रस्तुत करता है कि किस प्रकार वैश्वीकरण की प्रक्रियाएँ व्यक्तियों, संगठनों तथा राष्ट्र राज्यों को प्रभावित करती है तथा इनका कार्यक्षेत्र आर्थिक जगत से कही अधिक है। यद्यपि इन सबमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण वह सैद्धान्तिक तथा अवधारणात्मक प्रारुप है जिसमें वह वैश्वीकरण को एक स्थानिकलौकिक प्रघटना (spacio temporal phenomenon) के रुप में समझने पर बल देते हैं। गिड़िन्स का यह प्रारुप समकालीन वैश्वीकरण सिद्धान्त के लिए सबसे महत्वपूर्ण आधार वैश्वीकरण के विभिन्न पक्षों को समझने के लिए अमूर्त अवधारणाओं के एक समुच्चय (set) को प्रस्तुत करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

गिडिन्स, एन्थोनी 1991: कोन्जीक्वेन्सिस आफ मोडरेनिटी, केम्ब्रेजः पालिटी.